Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 11, November-2019, ISSN 2230-7540

बिरहोर जनजाति की सांस्कृतिक जीवन शैली का एक अध्ययन

Dr. Arvind Kumar Upadhyay*

Department of History

सार – *भारत में प्राचीन काल से ही आदिम समुदायों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की कुल आबादी का 8.6 प्रतिशत जनसंख्या अनुसूचति जनजातियों की है। चतुर्थ पंचवर्षीय योजना में ढ़ेवार आयोग की रिपोर्ट और अन्य अध्ययनों के आधार पर अनुसूचित जनजातियों में एक उप-समूह को चिन्हित किया गया जिसे 'आदिम आदिवासी समूह' Primitive Tribal Group (PTG) के नाम से जाना गया। यह उप-समूह या उप-श्रेणी जनजातियों के ऐसे समुदायों को चिन्हित करता है जो विकास के विभिन्न मापदण्डों से सबसे निम्न स्तर पर हैं। कम, स्थिर, अत्यन्त निम्न स्तरीय साक्षारता दर के कारण बाद में इस उप-समूह को Particularly vulnerable Tribal Group (PVTG) के नाम से जाना गया जो पहले Primitive Tribal Group (PTG) के नाम से जाना जाता था। यह उप-समूह जनजातियों अथवा आदिम समुदाय के अनेक विशिष्टिताओं को प्रदर्शित करते हैं उदाहरण के लिए शिकार कर भोजन इकट्ठा करना घने जंगलों में रहना इत्यादि। जनजातियों के ऐसे उप-समूहों की जातीय विशिष्टता और विशिष्ट जीवन शैली के संरक्षण के लिए अनेक नीतिगत प्रयास भी हुए हैं। वस्तुतः जनजातियों की विशिष्ट सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन शैली की इन्हें विशिष्ट बनाती है। ऐसे जनजातियों में बिरहोर एक प्रमुख जनजाति है जो भारत में लुप्तप्राय हो रहे हैं। अतः इस शोध-आलेख के माध्यम से विलुप्त हो रहे जनजातियों की एक उप-समूह 'बिरहोर' की सांस्कृतिक जीवन शैली का अध्ययन करना प्रसंगाधीन है।*

कुंजी शब्द: *आदिम, मापदण्ड, विशिष्टता, उप-समूह।*

----------X----------

अध्ययन पद्धति और तथ्यों का संकलन:

शोध-आलेख से संबंधित अध्ययन विवरणात्मक पद्धति पर आधारित है। अध्ययन के मुख्य पहलू में भारत में लुप्तप्राय हो रहे आदिम जनजाति 'बिरहोर' की सांस्कृतिक जीवन शैली के कतिपय महत्वपूर्ण पक्षों यथा, उनकी पारिवारिक संरचना, आवास और रहन-सहन की शैली, विशिष्ट परिधान और आभूषण, ईष्ट देवी-देवताओं, भोज्य व्यंजन इत्यादि विवेचनीय हैं। अध्ययन हेतु तथ्यों का संकलन द्वितीयक स्त्रोतों पर आधारित है जिसके अन्तर्गत प्रमुख शोध-ग्रन्थ, पत्र-पत्रिकाएँ इस अध्ययन में सहायक सामग्री होंगी।

विवेचन:

राय बहादुर सरत चंद राय ऐसे पहले मानव विज्ञानी हुए जिन्होंनें छोटानागपुर के जनजातियों का पहले पहल अध्ययन कर नृवंश विज्ञान में एक नये युग की शुरूआत की। उन्होने सन् 1925 ई. में बिरहोर से संबंधित एक सम्पूर्ण प्रबंध 'The Birhor: A little known Jungle Tribe of Chhotanagpur' प्रस्तुत किया था। बिरहोर दो शब्दों से बना है- 'वीर' अर्थात जंगल और 'होर' यानि आदमी अर्थात् जो वन या जंगलों में रहता हो अथवा जंगल में रहने वाला प्राणी। बिरहोर आदिवासी समुदाय के मुण्डानी से संबद्ध होते हैं और प्रमुख रूप से बिहार, झारखंड, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, छत्तीसगढ़ राज्यों में पाये जाते हैं। आदिम जनजातियों का यह समुदाय दो श्रेणियों में विभक्त होते हैं- 'उथलू' अर्थात घूमंतु अथवा खानाबदोश और 'जगही' अर्थात आसीन। घूमंतु अथवा खानाबदोश जीवन व्यतीय करनेवाले बिरहोरों की यह श्रेणी जंगलों में रहते हैं। जबकि 'जगही' यानि किसी निश्चित स्थान में आसीन होकर रहने वाले बिरहोरो की यह श्रेणी जंगली चीजों को इकट्ठा कर उसका बिक्रय करते हैं और कृषि कार्य भी करते हैं। बिरहोरो की साधारण बोल-चाल की भाषा

बिरहोरी है किन्तु ये अपने समुदाय से अलग अन्य लोगों से हिन्दी में भी बाताचीत करते हैं क्योंकि वे ऐसा सोचते हैं कि आधुनिक शिक्षा पद्धति, शहरीकरण और आधुनिकिकरण के कारण उनकी आनेवाली पीढ़ि बिरहोरी भाषा के अतिरिक्त हिन्दी को भी बोलचाल की भाषा में महत्व देना जरूरी है। लकड़ियों का संग्रह करना और शिकार करना इनके जीवन यापन में सामान्य बाते हैं। चिरौंजी, महुआ, तेंदुपत्ता, तेंदु-फल, बाँस के पत्ते और लकड़ियाँ आदि का संग्रह ये स्वयं के रहने के लिए जंगलों में झोपड़ियाँ भी बनाते हैं। गाय, बकरी, मुर्गी आदि इनके लिए पशुधन हैं जो प्रायः प्रत्येक बिरहोर के घर में पालतू पशु के रूप में पाये जाते हैं। घर की सुरक्षा के लिए कुत्तों का पालन और सर्प से बचने के लिए बिल्ली को पालते हैं। ये शिकार के द्वारा भोजन इकट्ठा करनेवाले पूर्ण रूप से खानाबदोश नहीं होते हैं। कृषि कार्य करना, जानवरों को पालने के अतिरिक्त अपने निकटतम शहर के कारखानों में मजदूरी भी करते हैं। बिरहोर कृषि कार्यों में भी स्वयं को संलग्न करते हैं और प्रमुख रूप से चावल की खेती करते हैं। चावल उनका प्रमुख भोजन भी है।

निवास स्थान और पारिवारिक संरचना:

इनके निवास स्थान को 'टांडा', टोला अथवा 'बंद' भी कहा जाता है। प्रत्येक निवास स्थल पर 6-7 झोपड़ियाँ होती है जिनके छत घास-फूस से बने होते हैं। हालांकि अब बिरहोरों के निवास स्थान पर झोपड़ीनुमा घर नहीं देखे जाते हैं क्योंकि सरकार द्वारा इनके स्थायी निवास के लिए पक्कानूमा घरों का निर्माण कराया गया है। इस समुदाय में अधिकांश परिवारों की संरचना एकीकृत होती है जिसमें मुख्य रूप से पति-पत्नी और उनके अविवाहित बच्चे रहते हैं। किशोर युवाओं के रहनेवाले स्थान को गिटी-ओरा कहा जाता है। किशोर अपने झोपड़ीनुमा घर का निर्माण अपने अभिभावक के घर के निकट ही करते हैं जबकि किशोरियाँ अपने अन्य बहनों के साथ परिवार के वरिष्ठ महिला सदस्य या अभिभावक के साथ रहती हैं। बिरहोरो के सांस्कृतिक जीवन शैली के मुख्यतः दो पहलू हैं पहला भोजना संग्रह करना और दूसरा विवाह और नातेदारी स्थापित करना। तीन से पाँच परिवार मिलकर ये अपने प्रत्येक उद्वेश्यों की पूर्ति के लिए एक समूह बनाते हैं जिसे टांडा कहा जाता है।

बिरहोरों में एक पत्नीक विवाह और बहु विवाह पद्धति भी प्रचलित है। अन्य जनजातियों की तुलना में इनकी बिरहोरों की आबादी अत्यन्त अल्प है और इनके समक्ष आर्थिक विपन्नता भी है। यही कारण है कि इनमे बहु विवाह पद्धति भी प्रचलित हैं ताकि परिवार कीं महिलाएँ बाँस की टोकरी के निर्माण में, जंगली उत्पादों के संग्रहण में और कृषि कार्यों में पुरूष सदस्यों के साथ सहभागी बन सके। पुरूष वर्ग अपने विवाहोपरान्त पैतृक सम्पत्ति का आपस में बंटवारा कर लेते हैं किन्तु प्रत्येक विवाहित पुरूष का अंश समानुपातिक नहीं होता है। उम्र के साथ उनका अंश निर्धारित होता है और साथ ही पिता स्वयं अपने लिये भी उन संपत्तियों का कुछ निश्चित अंश सुरक्षित रखता है। बिरहोरो में परिवार के पैतृक सम्पत्ति में उनके दामाद का समान हित निहित होता है। हालांकि पुत्रियाँ पुत्रों के समान पैतृक सम्पत्ति में अंश धारिणी नहीं होती है। प्रत्येक स्थिति में परिवार के वरिष्ठ सदस्य अथवा अभिभावक के मरणोपरान्त उनके अन्त्येष्टि का व्यय उत्तराधिकारियों को करना होता है।

देवी-देवता:

सिंगबोंगा बिरहोरो के सर्वोच्च देवता हैं जो सूर्य के प्रतीकात्मक हैं। सिंगबोंगा को बिरहोर परम शक्ति मानते हैं और मानव और आत्मा द्वारा किये जाने वाले सभी कार्यों का इन्हें साक्षी माना जाता है। भोजन संग्रह करने के लिए शिकार करने से पूर्व ये सिंगबोंगा की प्रार्थना भी करते हैं। देवी माय और बूड़ही माय बिरहोरो की मातृ देवी जबकि शिकार करने वाले देवता 'चंदी' और पहाड़ों 'महली चाटी' के नाम से जाने जाते हैं। इसी प्रकार 'बुरू बोंगस' अथवा 'ओटा बोगस' रूगण्ता के प्रमुख देवी-देवता हैं। जगही बिरहोर इन्हें बुरू बोंगस जबकि उथलू बिरहोर इन्हें ओरा बोंगस कहते हैं। बुरू बोंगस के पास कुछ विशिष्ट दैविक शक्ति होती है, जैसे वर्षापात कराना या इसके रोकना, ओला वृष्टि कराना अथवा इसके रोकना इत्यादि।

त्योहार एवं उत्सव:

उथलू बिरहोर में त्योहार एवं उत्सव बहुत अधिक नहीं होते हैं और ना ही ये अत्यधिक त्योहार-उत्सव मनाने में रूचि रखते हैं क्योंकि इनका सम्पूर्ण जीवन खानाबदोश होता है। बिरहोरो की यह श्रेणी प्रकृति से होनेवाली संभावित खतरों या आपदाओं से सदैव सावधान रहते हैं। बिरहोरो की दूसरी श्रेणी जगही में विभिन्न महिनों में भिन्न-भिन्न प्रकार के त्योहार मनाये जाते हैं। इस श्रेणी के लथा, चउली हेमब्रम, नगुरिया, माहाली और गिधि कुल में सितम्बर माह के 11वें दिन 'करामा' उत्सव मनाया जाता है। इस उत्सव के ठीक बारहवे दिन परिवार की विवाहित स्त्री सदस्य सम्पूर्ण उपवास रखती है। इसी प्रकार प्रतिवर्ष जुलाई माह में 'नवाजोम' नामक त्योहार मनाया जाता है जिसमें नये चावल को खाने की परंपरा है। अश्विन माह अर्थात अक्तूबर में 'देसाई' उत्सव मनाया जाता है जिसमें परिवारी के वयस्क सदस्य दिन-रात का सम्पूर्ण उपवास रखते हैं।

परिधान एवं आभूषण:

वयस्क बिरहोर भगवा या कारिया पहनते हैं यह एक छोटा सा वस्त्र होता है जिसे गाँव या शहर जाते समय इस प्रकार पहना जाता है ताकि उसका एक भाग कमर से बंधा हो और दूसरा भाग दोनों पैरो के बीच से सिकुड़ा हो। महिलाये वस्त्रों को इस प्रकार पहनती है कि वस्त्र का एक चौथाई हिस्सा उनकी कमर में लिपटा हो शेष भाग शरीर के ऊपरी हिस्सों को ढ़ँकता हो। महिलायें अपने बाल लंबी रखती है जबकि पुरूषों के बाल छोटे होते हैं। पुरूष अपने बाल और दाढ़ी की कटाई स्वयं एक दूसरे का करते हैं। परिवार में शिशु का जन्म होने पर आनुष्ठानिक शुद्धि के लिए पुरूष सदस्यों में दाढ़ी बनाने का प्रचलन है। वयस्क पुरूषों द्वारा एक मात्र आभूषण लोहे की ब्रेसलेट दोनो हाथ में पहना जाता है जबकि महिलायें पीतल से निर्मित ब्रेसलेट पहनती है और इसके अलावे हाथ की ऊंगलियों और पैरों में भी महिलायें पीतल की आभूषण धारण करती है।

अध्ययनोपरान्त यह कहा जा सकता है कि बिरहोर जनजाति की जीवन शैली और उनकी परंपराएँ उन्हें विशिष्ट बनाती है। अनेक त्योहार एवं उत्सव, रीति-रिवाज, पारिवारिक संरचनाएँ इन्हें भारत में पायेजानेवाली अन्य जनजातियों से पृथक और विशिष्ट दोनो बनाते हैं। हालांकि बिरहोरो की आबादी उत्तरोत्तर नगण्य होने की स्थिति में है फिर भी इनके जीवन शैली अथवा रहन-सहन के कतिपय महत्वपूर्ण पक्ष अन्य जनजातियों की अपेक्षा इन्हें विशिष्ट बनाती है।

संदर्भ-ग्रंथ

1. Vidyarthi, L.P. and Rai, B.K. (1985). The Tribal Culture of India, Concept Publishing, New Delhi
2. Roy, S.C. (1925). The Birhors: A little known Jungle Tribe of Chhotanagpur, Man in India Office, Ranchi.
3. Mukherjee, B.M. and Khatua, N. (1996). The Birhor of Madhya Pradesh, 'Man and Life', Vol.22Nos. 1-2. Prasad. N,"Land and People of Tribal Bihar."
4. Majumdar, D.N. (1961). Races and Culture of India, Asia Publishing House, Bombay.
5. Vikaspedia.in.education.
6. Welfare Department, Government of Jharkhand.
7. Tribal Welfare Research institute, Ranchi, Jharkhand.

Corresponding Author

Arvind Kumar Upadhyay*

Department of History